

छत्तीसगढ़ में पहाड़ी कोरवा जनजाति के सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता: पारंपरिक प्रथाओं, आजीविका पैटर्न और सरकारी योजनाओं के परिणामों की समीक्षा

वीणा ग्वाल¹, डॉ. अर्चना आर. तुपट²

¹शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, श्री रावतपुरा सरकार यूनिवर्सिटी रायपुर, छत्तीसगढ़

²सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग, श्री रावतपुरा सरकार यूनिवर्सिटी रायपुर, छत्तीसगढ़

सारांश:

छत्तीसगढ़, भारत में पहाड़ी कोरवा जनजाति, जिसे विशेष रूप से संवेदनशील आदिवासी समूह (PVTG) के रूप में मान्यता प्राप्त है, क्षेत्र की सबसे हाशिए पर रहने वाली समुदायों में से एक है। अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और पारंपरिक ज्ञान प्रणाली के बावजूद, वे सतत सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का सामना करते हैं, जो उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, आजीविका के अवसरों और सामाजिक गतिशीलता तक पहुंच को बाधित करती हैं। यह समीक्षा हाल के अध्ययनों (2012–2025) के निष्कर्षों को संकलित करती है, ताकि जनजाति की पारंपरिक प्रथाओं, आजीविका के पैटर्न, स्वास्थ्य और पोषण स्थिति, लैंगिक गतिशीलता और सरकारी कल्याण योजनाओं के प्रभाव की समग्र समझ प्रदान की जा सके। साहित्य से पता चलता है कि जीविकोपार्जन कृषि, वन-आधारित गतिविधियाँ और हस्तशिल्प कोरवा अर्थव्यवस्था के केंद्र में बने हुए हैं, फिर भी कम उत्पादकता, अपर्याप्त बुनियादी ढांचा और सीमित बाजार पहुंच आर्थिक विकास को बाधित करती है। शिक्षा प्राप्ति और स्वास्थ्य संकेतक अभी भी आदर्श स्तर से कम हैं, विशेषकर महिलाओं में, जिससे उनकी संवेदनशीलता और बढ़ जाती है। इंदिरा आवास योजना, आदिवासी विकास कार्यक्रम और स्वास्थ्य हस्तक्षेप जैसी सरकारी पहलों ने आवास, पोषण और जागरूकता सुधारने में सकारात्मक परिणाम दिखाए हैं, लेकिन इनका कवरेज असमान है और सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएँ अक्सर भागीदारी को सीमित करती हैं। यह समीक्षा नीति कार्यान्वयन, औपचारिक रोजगार तक पहुंच और पहाड़ी कोरवा के लिए सतत विकास रणनीतियों में मौजूद अंतराल को उजागर करती है। जातीय, समाजशास्त्रीय और नीति-उन्मुख शोध से साक्ष्य संकलित करके यह अध्ययन एकीकृत, सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील हस्तक्षेपों की आवश्यकता पर जोर देता है, जो समुदायों को आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से सशक्त बनाएं। निष्कर्ष नीति निर्धारकों, शोधकर्ताओं और सामाजिक विकास कार्यकर्ताओं के लिए संदर्भ का कार्य करेंगे, जो पहाड़ी कोरवा जनजाति की सामाजिक-आर्थिक भलाई को बढ़ाने और उनकी सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने का प्रयास कर रहे हैं।

कीवर्ड्स: पहाड़ी कोरवा, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, विशेष रूप से संवेदनशील आदिवासी समूह, पारंपरिक प्रथाएँ, आजीविका, सरकारी योजनाएँ, छत्तीसगढ़।

1. परिचय

1.1 पृष्ठभूमि

भारत में जनजातीय समुदाय देश के सामाजिक ताने-बाने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जिनकी अपनी अनूठी सांस्कृतिक प्रथाएँ, आजीविका रणनीतियाँ और पारिस्थितिक ज्ञान प्रणाली हैं। इनमें से, पहाड़ी कोरवा जनजाति, जिसे विशेष रूप से संवेदनशील आदिवासी समूह (PVTG) के रूप में वर्गीकृत किया गया है, मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ के उत्तरी और मध्य जिलों जैसे सर्गुजा, जशपुर और कोरबा में निवास करती है। PVTG वे समुदाय हैं जिन्हें भारत सरकार द्वारा सामाजिक और आर्थिक रूप से हाशिए पर रहने वाले के रूप में पहचान दी गई है, जिनमें साक्षरता दर कम, जनसंख्या घटती हुई और बुनियादी सेवाओं तक सीमित पहुंच होती है।

ऐतिहासिक रूप से, पहाड़ी कोरवा वन-निर्भर रहे हैं और जीविकोपार्जन कृषि, लघु वन उत्पाद संग्रह, शिकार और मौसमी मजदूरी के लिए पलायन जैसी गतिविधियों में संलग्न रहे हैं। उनका सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन पारंपरिक नियमों, वंश आधारित सामाजिक संरचनाओं, मौखिक परंपराओं और धार्मिक प्रथाओं के इर्द-गिर्द घूमता है। हालांकि, तीव्र आधुनिकीकरण, वनों की कटाई, औद्योगिकीकरण और सरकारी पुनर्वास कार्यक्रमों ने उनकी पारंपरिक अर्थव्यवस्था, सामाजिक सामंजस्य और पारिस्थितिक संतुलन को प्रभावित किया है (Das, 2020; Baxla & Mollick, 2024)।

1.2 सामाजिक-आर्थिक संदर्भ

पहाड़ी कोरवा की सामाजिक-आर्थिक स्थिति निम्न साक्षरता दर, पारंपरिक व्यवसायों पर उच्च निर्भरता, स्वास्थ्य और पोषण सेवाओं तक सीमित पहुंच और औपचारिक बाजारों में कम भागीदारी से चिह्नित होती है। Singh (2022) और Gupta & Kushwaha (2024) के अनुसार, पहाड़ी कोरवा परिवारों की औसत घरेलू आय गरीबी

रेखा से नीचे है, और महिलाएं घरेलू कार्यों और हस्तशिल्प तथा वन उत्पादों के माध्यम से आय अर्जित करने में दोहरी भूमिका निभाती हैं। स्वास्थ्य और पोषण संकेतक खराब हैं, जिसमें बच्चों में कुपोषण, एनीमिया और कम टीकाकरण कवरेज की उच्च दर देखी जाती है (Das et al., 2020; Bhoi & Kumar, 2025)। सरकारी हस्तक्षेप, जैसे कि आवास योजनाएँ (इंदिरा आवास योजना), शैक्षिक छात्रवृत्तियाँ और आजीविका सहायता कार्यक्रम, जीवन स्तर में आंशिक सुधार लाए हैं। इसके बावजूद, भौगोलिक अलगाव, अशिक्षा, सामाजिक भेदभाव और औपचारिक संस्थानों से जुड़ने में सांस्कृतिक हिचक के कारण इनकी प्रभावशीलता सीमित रहती है (Chandrakar, Chandrakar, & Das, 2023; Relwani & Namdeo, 2025)।

1.3 अध्ययन का तर्क

छत्तीसगढ़ में PVTG पर कई अध्ययनों के बावजूद, पहाड़ी कोरवा जनजाति के लिए सामाजिक-आर्थिक स्थितियों, पारंपरिक प्रथाओं और सरकारी योजनाओं के परिणामों का व्यापक समेकन अभी भी सीमित है। नवीनतम अनुभवजन्य अध्ययनों और नीति मूल्यांकनों की समीक्षा करके, इस पत्र का उद्देश्य है:

1. पहाड़ी कोरवा जनजाति की पारंपरिक सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक प्रथाओं का अध्ययन करना।
2. आजीविका के पैटर्न, आय स्रोत और पेशेवर संरचनाओं का विश्लेषण करना।
3. सामाजिक-आर्थिक स्थितियों को सुधारने में सरकारी योजनाओं और हस्तक्षेपों के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
4. भविष्य के हस्तक्षेपों के लिए अनुसंधान और नीति में अंतराल की पहचान करना।

1.4 उद्देश्य:

- पहाड़ी कोरवा की सांस्कृतिक विरासत और पारंपरिक प्रथाओं को समझना।
- जनजाति द्वारा सामना की जाने वाली सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का पता लगाना।
- समुदाय के उत्थान में सरकारी कल्याण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
- सतत विकास और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील हस्तक्षेपों के लिए सिफारिशें प्रदान करना।

2. साहित्य समीक्षा

छत्तीसगढ़ में विशेष रूप से संवेदनशील आदिवासी समूह (PVTG) के रूप में पहाड़ी कोरवा जनजाति पिछले दशक में नृवंशविज्ञान, समाजशास्त्र और नीति आधारित अनुसंधान का विषय रही है। इस खंड में उनके सामाजिक-आर्थिक हालात, पारंपरिक प्रथाएँ, स्वास्थ्य, शिक्षा और सरकारी हस्तक्षेपों के परिणामों पर हुए अध्ययनों का संकलन प्रस्तुत किया गया है।

2.1 पारंपरिक सांस्कृतिक प्रथाएँ: पहाड़ी कोरवा एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत बनाए रखते हैं, जिसमें रीति-रिवाज, मौखिक परंपराएँ, उत्सव और वंश आधारित सामाजिक संरचनाएँ शामिल हैं। **Mishra (2018)** के अनुसार, जनजाति की सामाजिक प्रणाली पदानुक्रमित होने के बावजूद समुदाय-केंद्रित है, जहाँ निर्णय अक्सर वंश परिषदों और बुजुर्गों की बैठकों में लिए जाते हैं। जन्म, विवाह और मृत्यु से जुड़ी रीति-रिवाजों उनकी पहचान में गहराई से निहित हैं, और कुछ प्रथाएँ कृषि चक्र और वन-आधारित गतिविधियों से जुड़ी होती हैं। **Baxla और Mollick (2024)** बताते हैं कि आधुनिकता के प्रभाव के बावजूद सांस्कृतिक संरक्षण मजबूत बना हुआ है, जिसमें पारंपरिक संगीत, नृत्य और कारीगरी दैनिक जीवन का केंद्र हैं। **Behera (2022)** ने कोरवा भाषा और बोलियों की अनोखी पहचान पर बल दिया है, जो पीढ़ियों के बीच ज्ञान हस्तांतरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। **Kujur, Kujur, और Singh (2022)** ने पहाड़ी कोरवा में पारंपरिक स्वास्थ्य प्रथाओं का अध्ययन किया, जिसमें स्थानीय जड़ी-बूटियों, अनुष्ठानात्मक उपचार और आध्यात्मिक प्रथाओं का उपयोग दर्ज किया गया। **Rathore (2024)** ने भी देखा कि एथनोमेडिसिनल पौधों का उपयोग उनके आसपास के पर्यावरण में व्यापक है, जो संस्कृति और पारिस्थितिक ज्ञान का एकीकरण दर्शाता है।

साहित्य से स्पष्ट है कि आधुनिकता नए अवसर लाती है, फिर भी सांस्कृतिक निरंतरता समुदाय के लिए प्राथमिकता बनी रहती है, जो सामाजिक व्यवहार, पेशेवर चयन और सामुदायिक एकजुटता को प्रभावित करती है (**Gajpal, 2025; Das, 2020**)।

2.2 आजीविका पैटर्न और पेशे: पहाड़ी कोरवा की पारंपरिक आजीविका मुख्यतः कृषि और वन-आधारित है। जीविकोपार्जन कृषि, लघु वन उत्पाद संग्रह, शिकार और मौसमी मजदूरी उनके मुख्य आय स्रोत हैं (**Singh, 2022; Relwani & Namdeo, 2025**)। **Nagwanshee और Kumar (2025)** के अनुसार, बिरहोर और कोरवा समुदाय परंपरागत रूप से फसल चक्रीकरण और स्थानांतरित कृषि का उपयोग करते हैं, जो ऐतिहासिक रूप से सतत रही है, लेकिन अब सीमित भूमि स्वामित्व और कम वन उपलब्धता के कारण उत्पादकता में चुनौतियाँ आ रही हैं। हस्तशिल्प और कारीगरी अतिरिक्त आय स्रोत हैं, विशेषकर महिलाओं के लिए, हालांकि **Sethi और Kushwah (2025)** बताते हैं कि सीमित बाजार पहुँच और अपर्याप्त प्रशिक्षण उनके आर्थिक संभावनाओं को सीमित करता है। **Bhoi और Kumar (2025)** ने यह भी दर्ज किया कि आहार और आजीविका परस्पर जुड़े हुए हैं, जिसमें वन उत्पाद पोषण और नकदी आय दोनों में योगदान करते हैं। पारंपरिक ज्ञान और संसाधन उपयोग कौशल के बावजूद आर्थिक असुरक्षा उच्च बनी हुई है। **Sethi (2020)** ने देखा कि कृषि गैर-सिजन के दौरान कर्ज और अनौपचारिक ऋण प्रणाली पर निर्भरता व्यापक है। **Khan और Chauhan (2021)** ने आदिवासी और गैर-आदिवासी कृषि परिवारों की तुलना की, जिसमें पाया गया कि कोरवा परिवार कम भूमि, सिंचाई की कमी और कृषि विस्तार सेवाओं तक कम पहुँच के कारण कम आय अर्जित करते हैं।

सरकार द्वारा आजीविका समर्थन के लिए चलाई गई योजनाएँ, जैसे कृषि सब्सिडी, कौशल विकास कार्यक्रम और रोजगार योजनाएँ (MGNREGA), मिश्रित परिणाम दिखाती हैं। कुछ परिवारों ने आय सुरक्षा में सुधार बताया, लेकिन देरी से भुगतान, जागरूकता की कमी और सांस्कृतिक हिचक के कारण सार्वभौमिक लाभ बाधित होता है (Gupta & Kushwaha, 2024; Chandrakar, Chandrakar, & Das, 2023)।

2.3 स्वास्थ्य और पोषण स्थिति: पहाड़ी कोरवा में स्वास्थ्य और पोषण एक गंभीर चिंता का विषय हैं। Das, Ghritlahre, Siddiqui, और Meitei (2020) ने पूर्व-विद्यालय बच्चों में उच्च कुपोषण स्तर की रिपोर्ट दी है, जबकि Mishra (2016) ने मातृ और शिशु स्वास्थ्य संकेतकों में कमी नोट की है। Gaur और Patnaik (2011) बताते हैं कि विस्थापित कोरवा का आहार पैटर्न बाधित हुआ है और औषधीय पौधों तक पहुँच कम हुई है, जिससे समग्र स्वास्थ्य प्रभावित हुआ है।

Baxla और Sahu (2023) ने स्वास्थ्य विश्वास और उपचार प्रथाओं का विश्लेषण किया, जिसमें पारंपरिक चिकित्सा, आध्यात्मिक उपचारक और जड़ी-बूटियों पर निर्भरता देखी गई। ऐसे अभ्यास अक्सर औपचारिक स्वास्थ्य देखभाल का पूरक होते हैं। Kashyap और Lakhera (2025) के अनुसार, हल्बा और संबंधित जनजातियों में रोगों की धारणा सांस्कृतिक विश्वास और सीमित स्वास्थ्य साक्षरता से प्रभावित होती है।

सरकारी स्वास्थ्य पहलें जैसे टीकाकरण अभियान, पोषण पूरक (ICDS) और जागरूकता कार्यक्रमों ने आंशिक रूप से स्वास्थ्य परिणामों में सुधार किया है। Meghani et al. (2024) ने छत्तीसगढ़ की जनजातीय समुदायों में सफल टीकाकरण अभियानों को उजागर किया, हालांकि लॉजिस्टिक चुनौतियाँ और सांस्कृतिक हिचक बनी हुई हैं। Nandi et al. (2012) ने प्रजनन स्वास्थ्य की वकालत का महत्व रेखांकित किया, noting कि PVTGs अक्सर आवश्यक स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच का सामना करते हैं।

2.4 शैक्षिक स्थिति और लैंगिक आयाम: पहाड़ी कोरवा में शिक्षा सीमित है, विशेषकर महिलाओं के लिए। Das (2020) और Toppo (2022) ने नोट किया कि साक्षरता दर राज्य औसत से कम है, और सांस्कृतिक मानदंड तथा आर्थिक प्रतिबंध महिला शिक्षा को सीमित करते हैं। Mukherjee और Patnaik (2025) बताते हैं कि विस्थापन और गरीबी स्कूल छोड़ने की दर को बढ़ाती है।

चुनौतियों के बावजूद, सरकारी पहलों जैसे छात्रवृत्तियाँ, मध्याह्न भोजन और आवासीय विद्यालयों ने नामांकन बढ़ाया है (Soni, 2024)। हालांकि, भाषाई बाधाएँ, अनुपस्थिति और अपर्याप्त बुनियादी ढांचा इन हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता को कम करते हैं। लैंगिक असमानताएँ स्पष्ट हैं, महिलाओं को घरेलू कार्य और आय अर्जन में दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है (Dhruw, Kaushal, Bhagat, & Attri, 2020)। Sharma, Tiwari, और Satpathi (2023) ने महिलाओं में आदिवासी उद्यमिता के अवसरों को उजागर किया, लेकिन सीमित कौशल प्रशिक्षण और बाजार पहुँच आर्थिक सशक्तिकरण को बाधित करती है। अध्ययन बताते हैं कि शैक्षिक उन्नति केवल आर्थिक सुधार का साधन नहीं है, बल्कि स्वास्थ्य, सामाजिक गतिशीलता और सांस्कृतिक बातचीत बढ़ाने के लिए भी आवश्यक है (Baxla & Mollick, 2024; Meena, 2024)।

2.5 सरकारी योजनाएँ और नीति परिणाम: छत्तीसगढ़ में PVTGs को लक्षित सरकारी कार्यक्रमों का उद्देश्य आवास, स्वास्थ्य, आजीविका और शिक्षा को बढ़ावा देना है। Singh (2022) और Gupta & Kushwaha (2024) ने इंदिरा आवास योजना, MGNREGA, आदिवासी कल्याण पेंशन और कौशल विकास पहलों के प्रभाव को दर्ज किया। आवास कार्यक्रमों ने जीवन स्थितियों में सुधार किया है, फिर भी बिजली, पेयजल और स्वच्छता तक पहुँच सीमित है।

आर्थिक सशक्तिकरण योजनाएँ अतिरिक्त आय और हस्तशिल्प, कृषि और वन-आधारित पेशों में प्रशिक्षण प्रदान करती हैं (Sethi & Kushwah, 2025)। फिर भी, नीति कार्यान्वयन में अंतराल, नौकरशाही में देरी और सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएँ इष्टतम परिणाम को रोकती हैं। Bose (2023) और Chhotray, Adhikari, और Bahuguna (2020) ने भागीदारी वाली नीति निर्माण की आवश्यकता को रेखांकित किया, यह सुझाव देते हुए कि समावेशी योजना प्रभावशीलता बढ़ा सकती है।

स्वास्थ्य और पोषण योजनाओं ने आंशिक सफलता दिखाई है। Nagaria et al. (2025) ने उच्च रक्तचाप और जीवनशैली संबंधित रोगों की व्यापकता की रिपोर्ट दी, जो कार्यक्रम आरंभ करने के बाद भी निरंतर हस्तक्षेप की आवश्यकता को दर्शाती है। नीति कार्यान्वयन में सांस्कृतिक संवेदनशीलता महत्वपूर्ण है, क्योंकि स्थानीय प्रथाओं से असंगत हस्तक्षेप अक्सर समुदाय को प्रभावी रूप से जोड़ने में विफल रहते हैं (Gaur & Patnaik, 2011; Soni, 2024)।

2.6 चुनौतियाँ, अंतराल और भविष्य की दिशा:

दशकों के अनुसंधान और हस्तक्षेप के बावजूद, महत्वपूर्ण अंतराल बने हुए हैं: **आर्थिक असुरक्षा-** सीमित भूमि स्वामित्व, कम उपज वाली कृषि पर निर्भरता और अनौपचारिक ऋण प्रणाली आय सृजन को सीमित करती है (Sethi, 2020; Singh, 2023)। **स्वास्थ्य और पोषण-** कुपोषण, मातृ-शिशु स्वास्थ्य की कमी और पारंपरिक चिकित्सा पर निर्भरता सांस्कृतिक एकीकृत स्वास्थ्य हस्तक्षेपों की आवश्यकता को दर्शाती है (Baxla & Sahu, 2023)। **शैक्षिक असमानताएँ:** कम साक्षरता दर, लैंगिक असमानता और बुनियादी ढांचे की कमी लक्षित शैक्षिक नीतियों की आवश्यकता को इंगित करती है (Toppo, 2022; Sharma, 2024)। **नीति कार्यान्वयन-** सरकारी योजनाओं से लाभ में देरी या अधूरा वितरण प्रभाव को कम करता है; सहभागी शासन मॉडल आवश्यक हैं (Chandrakar, Chandrakar, & Das, 2023; Bose, 2023)। **सांस्कृतिक संरक्षण बनाम आधुनिकीकरण-** पारंपरिक प्रथाओं को आर्थिक और सामाजिक विकास के साथ संतुलित करना चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि आधुनिकीकरण सांस्कृतिक निरंतरता को बाधित कर सकता है (Baxla & Mollick, 2024; Behera, 2022)।

भविष्य के अनुसंधान को एकीकृत हस्तक्षेपों पर केंद्रित होना चाहिए, जो स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका समर्थन और सांस्कृतिक संरक्षण को संयोजित करें। सहभागी दृष्टिकोण, समुदाय-चालित योजना और साक्ष्य-आधारित नीति सतत विकास को बढ़ावा दे सकती है और पहाड़ी कोरवा की सांस्कृतिक पहचान को बनाए रख सकती है।

3. कार्यप्रणाली:

छत्तीसगढ़ में पहाड़ी कोरवा जनजाति के सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता पर इस समीक्षा लेख की कार्यप्रणाली एक प्रणालीगत साहित्य समीक्षा (Systematic Literature Review) दृष्टिकोण पर आधारित है। इस कार्यप्रणाली का उद्देश्य मौजूदा अनुभवजन्य शोध, नीति रिपोर्ट और वैज्ञानिक प्रकाशनों का संकलन करके पारंपरिक प्रथाओं, आजीविका पैटर्न, स्वास्थ्य और शिक्षा की स्थिति, तथा सरकारी योजनाओं के परिणामों की समग्र समझ प्रदान करना है।

3.1 अनुसंधान डिजाइन:

यह अध्ययन गुणात्मक, वर्णनात्मक और एकीकृत अनुसंधान डिजाइन अपनाता है, जो मुख्य रूप से द्वितीयक डेटा स्रोतों पर केंद्रित है। वर्णनात्मक दृष्टिकोण मौजूदा जानकारी को संकलित और समेकित करने में सहायक है, जिससे पहाड़ी कोरवा के सामाजिक-आर्थिक जीवन में पैटर्न, रुझान और संबंधों को उजागर किया जा सके। एकीकृत दृष्टिकोण विभिन्न शैक्षणिक दृष्टिकोण—जैसे मानवविज्ञान, समाजशास्त्र, सार्वजनिक स्वास्थ्य, शिक्षा और विकास अध्ययन—को मिलाकर समुदाय की समग्र समझ प्रस्तुत करता है।

संगठित समीक्षा ढांचा अपनाया गया ताकि सूचना संग्रह, मूल्यांकन और समेकन में कार्यप्रणालीगत कठोरता और पारदर्शिता सुनिश्चित की जा सके। इसमें प्रासंगिक अध्ययन चयन के लिए स्पष्ट मानदंड, मुख्य विषयों की पहचान, और सामाजिक-आर्थिक विकास एवं नीति हस्तक्षेपों के संदर्भ में निष्कर्षों का विश्लेषण शामिल है।

3.2 डेटा स्रोत:

द्वितीयक डेटा सहकर्मि-समीक्षित पत्रिकाओं, सरकारी रिपोर्टों, पुस्तकों, शोध प्रबंधों और विश्वसनीय संस्थागत रिपॉजिटरी से एकत्र किया गया। प्रमुख डेटाबेस और प्लेटफॉर्म हैं- SCI और SSCI सूचीबद्ध पत्रिकाओं के लिए Scopus और Web of Science, स्वास्थ्य संबंधित अध्ययन के लिए PubMed और BMJ Global Health, मुक्त-संपर्क लेखों और संस्थागत प्रकाशनों के लिए Google Scholar, नृवंशविज्ञान और समाजभाषाविज्ञान डेटा के लिए SIL International और Tribal Research and Training Institute की रिपोर्ट, भारत सरकार के आदिवासी मामलों के मंत्रालय और छत्तीसगढ़ राज्य आदिवासी कल्याण विभाग की सरकारी प्रकाशन और रिपोर्ट, कुल मिलाकर 1970 से 2025 तक प्रकाशित 48 से अधिक शैक्षणिक स्रोतों और सरकारी रिपोर्टों की समीक्षा की गई, जिससे ऐतिहासिक दृष्टिकोण और समकालीन विकास दोनों को समाहित किया जा सके।

3.3 समावेशन और बहिष्करण मानदंड

समावेशन मानदंड: अध्ययन जो विशेष रूप से छत्तीसगढ़ में पहाड़ी कोरवा या संबंधित PVTGs पर केंद्रित हों, प्रकाशन जो सामाजिक-आर्थिक पहलुओं जैसे आजीविका, आय, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण और सरकारी योजनाओं तक पहुँच को संबोधित करें, पारंपरिक प्रथाओं, सांस्कृतिक मानदंडों और आदिवासी स्वास्थ्य प्रणालियों पर शोध, अंग्रेजी या हिंदी में प्रकाशित, सहकर्मि-समीक्षित अध्ययन, आदिवासी कल्याण से संबंधित सरकारी रिपोर्ट, नीति दस्तावेज और विश्वसनीय NGO रिपोर्ट,।

बहिष्करण मानदंड: गैर-आदिवासी या असंबंधित PVTGs पर केंद्रित अध्ययन जिनमें तुलनात्मक जानकारी नहीं हो, गैर-समीक्षित लेख और असत्यापित ऑनलाइन स्रोत, सामाजिक-आर्थिक या सांस्कृतिक प्रथाओं पर पर्याप्त अनुभवजन्य या वर्णनात्मक डेटा न होने वाले प्रकाशन।

इन मानदंडों के अनुपालन से उच्च गुणवत्ता, प्रासंगिक और संदर्भ-विशिष्ट साहित्य शामिल किया गया, जिससे थीमेटिक समेकन के लिए मजबूत आधार सुनिश्चित हुआ।

3.4 डेटा निष्कर्षण और विश्लेषण:

प्रत्येक स्रोत से प्रमुख जानकारी निकालने के लिए एक व्यवस्थित डेटा निष्कर्षण प्रक्रिया अपनाई गई, जिसमें शामिल हैं: लेखक(ओं) और प्रकाशन वर्ष; अध्ययन के उद्देश्य और दायरा; अनुसंधान विधियाँ और अध्ययन डिजाइन (अनुभवजन्य अध्ययन के लिए); सामाजिक-आर्थिक स्थिति, आजीविका पैटर्न, स्वास्थ्य, शिक्षा और सरकारी योजनाओं के परिणामों से संबंधित प्रमुख निष्कर्ष-भौगोलिक स्थान, जनसंख्या आकार और आदिवासी उप-समूह विशेषताओं जैसे संदर्भात्मक कारक निष्कर्षित डेटा को थीमेटिक श्रेणियों में व्यवस्थित किया गया:

पारंपरिक प्रथाएँ और सांस्कृतिक प्रणाली – रीति-रिवाज, भाषा, एथनोमेडिसिन, और सामुदायिक शासन। **आजीविका पैटर्न और आर्थिक गतिविधियाँ** – कृषि, वन-आधारित पेशे, हस्तशिल्प, और आय सृजन रणनीतियाँ। **स्वास्थ्य और पोषण स्थिति** – कुपोषण, प्रजनन स्वास्थ्य, रोग धारणा, और स्वास्थ्य-खोज व्यवहार। **शिक्षा और लैंगिक आयाम** – साक्षरता, स्कूल नामांकन, महिला शिक्षा, और सीखने में बाधाएँ। **सरकारी योजनाओं के परिणाम** – आवास, आजीविका कार्यक्रम, स्वास्थ्य पहल और शिक्षा योजनाएँ। **चुनौतियाँ और अंतराल** – सामाजिक-आर्थिक असुरक्षा, नीति कार्यान्वयन में बाधाएँ, और आधुनिकीकरण का सांस्कृतिक प्रभाव। नैरेटिव समेकन विधि का उपयोग किया गया, जिससे पैटर्न, विरोधाभास और उभरते विषयों की पहचान हो सके। यह दृष्टिकोण मात्रात्मक समेकन के बजाय व्याख्या पर जोर देता है, जो मौजूदा साहित्य की गुणात्मक और वर्णनात्मक प्रकृति के लिए उपयुक्त है।

3.5 गुणवत्ता मूल्यांकन-

निष्कर्षों की विश्वसनीयता और वैधता सुनिश्चित करने के लिए सभी शामिल स्रोतों का गुणवत्ता मूल्यांकन किया गया। मूल्यांकन में मुख्य बिंदु थे: पत्रिकाओं का सहकर्मि-समीक्षित होना या प्रकाशन संस्थान की विश्वसनीयता, कार्यप्रणालीगत कठोरता, जैसे नमूना आकार, अध्ययन डिजाइन और डेटा संग्रह की पारदर्शिता, पहाड़ी कोरवा के सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक या स्वास्थ्य आयामों से प्रासंगिकता, नवीनता और संदर्भ प्रासंगिकता, पिछले 15 वर्षों में किए गए अध्ययन को प्राथमिकता देते हुए, ऐतिहासिक संदर्भ के लिए पुराने महत्वपूर्ण कार्यों को शामिल करना इन मानदंडों पर कम अंक पाने वाले अध्ययन थीमेटिक विश्लेषण से बाहर कर दिए गए।

3.6 कार्यप्रणाली की सीमाएँ

संगठित प्रयासों के बावजूद कुछ सीमाएँ हैं: द्वितीयक डेटा पर निर्भरता- प्राथमिक फील्डवर्क नहीं किया गया, जिससे प्रत्यक्ष अवलोकन और प्रत्यक्ष अनुभव सीमित

हो सकते हैं, अध्ययनों में विषमता- अध्ययन डिजाइन, नमूना आकार और भौगोलिक फोकस में भिन्नता प्रत्यक्ष तुलना को चुनौतीपूर्ण बनाती है, डेटा अंतराल- विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक परिणामों और आदिवासी उप-समूहों में भिन्नताओं पर सीमित समकालीन डेटा व्यापक विश्लेषण को सीमित कर सकता है, भाषाई पूर्वाग्रह- हिंदी और अंग्रेजी अध्ययन शामिल किए गए, लेकिन स्थानीय बोलियों में प्रकाशित शोध कम प्रतिनिधित्व हो सकता है।

इन सीमाओं को कई डेटा स्रोतों का उपयोग, निष्कर्षों का क्रॉस-रेफरेंस और विभिन्न अध्ययनों में देखे गए निरंतर विषयों पर ध्यान केंद्रित करके कम किया गया।

3.7 नैतिक विचार:

चूंकि यह अध्ययन साहित्य समीक्षा है, मानव विषयों के साथ प्रत्यक्ष संपर्क नहीं किया गया, जिससे सूचित सहमति या गोपनीयता उल्लंघन की चिंता समाप्त हो जाती है। नैतिक सिद्धांत निम्नलिखित रूप में लागू किए गए: सभी स्रोतों और बौद्धिक संपदा का सही संदर्भ देना, समुदायों का वस्तुनिष्ठ प्रतिनिधित्व, बिना सांस्कृतिक स्टीरियोटाइपिंग या पूर्वाग्रह के आदिवासी ज्ञान का सम्मान और चर्चा में पारंपरिक प्रथाओं की मान्यता

सारांश में, यह कार्यप्रणाली प्रणालीगत साहित्य खोज, थीमेटिक विश्लेषण और गुणवत्ता मूल्यांकन को संयोजित करती है, ताकि पहाड़ी कोरवा जनजाति के सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता की व्यापक समीक्षा प्रस्तुत की जा सके। अंतःविषय अनुसंधान, नीति विश्लेषण और नृवंशविज्ञान अध्ययन को एकीकृत करके, यह समीक्षा जनजाति की आजीविका, सांस्कृतिक निरंतरता, स्वास्थ्य, शिक्षा और सरकारी योजनाओं के साथ उनकी अंतःक्रियाओं की समग्र समझ प्रदान करती है। इस संरचित दृष्टिकोण से अकादमिक और नीति निर्धारण दोनों दर्शकों के लिए कठोरता, पारदर्शिता और प्रासंगिकता सुनिश्चित होती है।

4. परिणाम विश्लेषण और चर्चा

4.1 पहाड़ी कोरवा जनजाति की सामाजिक-आर्थिक स्थिति: पहाड़ी कोरवा जनजाति की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उनके ऐतिहासिक हाशिएपन, भौगोलिक पृथक्ता और आधुनिक अवसरचना तक सीमित पहुँच को दर्शाती है। विभिन्न अध्ययनों (सिंह, 2022; मिश्रा, 2018; रेलवानी और नामदेव, 2025) के अनुसार, अधिकांश परिवारों की आय निम्न स्तर की है और ये मुख्य रूप से उपार्जन आधारित कृषि, मौसमी मजदूरी, और वन आधारित संसाधनों पर निर्भर हैं। पहाड़ी कोरवा परिवारों की औसत मासिक आय ₹3,000-₹5,000 के बीच है, जो ग्रामीण छत्तीसगढ़ के राज्य औसत की तुलना में काफी कम है (सिंह, 2022)। आय असमानता को कई आदिवासी परिवारों के पास भूमि स्वामित्व न होने के कारण और बढ़ावा मिलता है, जिससे संस्थागत ऋण और सरकारी सब्सिडी तक उनकी पहुँच सीमित रहती है (मुखर्जी और पट्टनायक, 2025)।

तालिका 4.1: पहाड़ी कोरवा जनजाति के सामाजिक-आर्थिक संकेतक

सांकेतिकक	मान / अवलोकन	स्रोत(स)
औसत पारिवारिक आय (INR)	₹3,500-₹5,000	सिंह, 2022; रेलवानी और नामदेव, 2025
साक्षरता दर (%)	कुल 42%; महिला 30%, पुरुष 55%	टोप्पो, 2022; गुप्ता और कुशवाहा, 2024
बिजली तक पहुँच (%)	38% परिवार	सिंह, 2022
पीने के पानी की सुविधा (%)	45% परिवार	मिश्रा, 2018
भूमि स्वामित्व (%)	60% के पास आंशिक भूमि अधिकार	रेलवानी और नामदेव, 2025
सरकारी योजनाओं में भागीदारी (%)	50-65%	गुप्ता और कुशवाहा, 2024

प्राप्त डेटा लगातार सामाजिक-आर्थिक असुरक्षाओं को दर्शाता है: निम्न साक्षरता दर, अपर्याप्त आवास, और मूलभूत सुविधाओं तक सीमित पहुँच। विशेष रूप से महिलाएँ घरेलू जिम्मेदारियों और पारिवारिक आय में योगदान—मुख्य रूप से वन आधारित संसाधनों के संग्रह और कृषि मजदूरी के माध्यम से—का दोहरा बोझ उठाती हैं (ध्रुव एट अल., 2020)।

4.2 आजीविका पैटर्न और आर्थिक गतिविधियाँ

पारंपरिक पहाड़ी कोरवा आजीविकाएँ गहन रूप से वन पारिस्थितिकी तंत्र से जुड़ी हुई हैं। उपार्जन आधारित कृषि, गैर-काष्ठीय वन उत्पादों का संग्रह, और दैनिक मजदूरी मुख्य आय स्रोत हैं (दास, 2020; सेठी, 2020)। कम आय वाले समय में पास के शहरों में कृषि मजदूरी के लिए मौसमी पलायन आम है, जो इन परिवारों की आर्थिक असुरक्षा को उजागर करता है।

तालिका 4.2: पहाड़ी कोरवा जनजाति की मुख्य आजीविका गतिविधियाँ

आजीविका गतिविधि	भाग लेने वाले परिवारों का प्रतिशत (%)	टिप्पणियाँ	स्रोत(स)
उपार्जन आधारित कृषि	75%	मुख्यतः बाजरा, धान, दलहन	सिंह, 2022; दास, 2020
वन संसाधन संग्रह	60%	औषधीय पौधे, ईंधन लकड़ी, बाँस	Baxla & Mollick, 2024

दैनिक मजदूरी	50%	पास के शहरों में मौसमी पलायन	सेठी, 2020; मुखर्जी और पट्टनायक, 2025
हस्तशिल्प / जनजातीय कला	20%	मुख्य रूप से महिला कारीगर	सेठी & कुशवाहा, 2025
सरकारी योजना नौकरियों (MGNREGA)	15%	अनियमित भागीदारी	गुप्ता & कुशवाहा, 2024

आय के सीमित विविधीकरण के कारण मौसमी झटकों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ जाती है। हस्तशिल्प महिलाओं के लिए विशेष रूप से अतिरिक्त आय का स्रोत प्रदान करता है, लेकिन संगठित व्यापार नेटवर्क तक सीमित पहुँच के कारण बाजार में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है (सेठी & कुशवाहा, 2025)।

4.3 शिक्षा और साक्षरता:

पहाड़ी कोरवा में शिक्षा का स्तर काफी निम्न है। कुल साक्षरता दर 42% है, जिसमें लैंगिक असमानताएँ स्पष्ट हैं: पुरुषों के लिए 55% और महिलाओं के लिए केवल 30% (टोप्पो, 2022; गुप्ता & कुशवाहा, 2024)। नामांकन और निरंतरता दर कम होने के कई कारण हैं: **स्कूलों की दूरी**- कई आदिवासी बस्तियाँ औपचारिक स्कूलों से दूर स्थित हैं, **आर्थिक प्रतिबंध**- बच्चे अक्सर घरेलू कामों और कृषि में सहायता करते हैं, **सांस्कृतिक कारण**: पारंपरिक आजीविका के लिए शिक्षा को कम प्रासंगिक माना जाता है (मिश्रा, 2018)।

तालिका 4.3: पहाड़ी कोरवा जनजाति के शैक्षणिक संकेतक

सांकेतिकक	पुरुष (%)	महिला (%)	कुल (%)	स्रोत
साक्षरता दर	55	30	42	टोप्पो, 2022; गुप्ता & कुशवाहा, 2024
स्कूल में नामांकन (6-14 वर्ष)	60	45	52	श्रीवास्तव, 2020
ड्रॉपआउट दर (प्राथमिक से माध्यमिक)	40	55	48	दास, 2020

कम महिला साक्षरता सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता और सरकारी लाभों तक पहुँच को सीमित करती है, जिससे गरीबी का चक्र लगातार बना रहता है।

4.4 स्वास्थ्य, पोषण और पारंपरिक प्रथाएँ: स्वास्थ्य और पोषण महत्वपूर्ण चिंताएँ बनी हुई हैं। पहाड़ी कोरवा महिलाओं और बच्चों में कुपोषण, एनीमिया, और प्रसव पूर्व एवं पश्चात मृत्यु दर अधिक है (दास एट अल., 2020; शर्मा, 2024; नगरिया एट अल., 2025)। औपचारिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच सीमित है; आदिवासी समुदाय प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल के लिए पारंपरिक चिकित्सक और एथनोमेडिसिनल प्रथाओं पर निर्भर रहते हैं (बक्सला & साहू, 2023; कुमार & जैन, 2023)।

तालिका 4.4: पहाड़ी कोरवा जनजाति के स्वास्थ्य संकेतक

स्वास्थ्य संकेतक	अवलोकन / %	स्रोत
कुपोषण (5 वर्ष से कम बच्चों में)	45%	दास एट अल., 2020
एनीमिया (महिलाएँ 15-49 वर्ष)	50%	नगरिया एट अल., 2025
शिशु मृत्यु दर (प्रति 1000)	68	शर्मा, 2024
स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच (%)	40%	बक्सला & साहू, 2023
पारंपरिक चिकित्सकों पर निर्भरता (%)	70%	कुमार & जैन, 2023

स्थानीय रूप से उपलब्ध औषधीय पौधों, उपचारात्मक अनुष्ठानों और प्रसूति के लिए दाई जैसी पारंपरिक चिकित्सीय प्रथाओं का उपयोग एथनोमेडिकल प्रथाओं में शामिल है (राठौर, 2024; कोल्ला एट अल., 2025)। यद्यपि ये हल्की बीमारियों के लिए प्रभावी हैं, गंभीर रोगों के लिए पर्याप्त नहीं हैं, जिससे समेकित स्वास्थ्य देखभाल हस्तक्षेपों की आवश्यकता उजागर होती है।

4.5 सरकारी योजनाएँ और नीति हस्तक्षेप:

पहाड़ी कोरवा की सामाजिक-आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए कई सरकारी योजनाएँ लागू की गई हैं, जिनमें MGNREGA, इंदिरा आवास योजना, आदिवासी शिक्षा कार्यक्रम और स्वास्थ्य पहल शामिल हैं (गुप्ता & कुशवाहा, 2024; श्रीवास्तव, 2020)। हालांकि, इनका प्रभाव मिश्रित है, जिसके कारण हैं: योजनाओं के प्रति जागरूकता की कमी, नौकरशाही में देरी और भ्रष्टाचार, आदिवासी बस्तियों का भौगोलिक अलगाव, सांस्कृतिक बाधाएँ जो योजना के लाभ लेने में रुकावट डालती हैं (चंद्राकर एट अल., 2023)।

तालिका 4.5: सरकारी योजनाओं में भागीदारी और उनके परिणाम

योजना	भागीदारी (%)	परिणाम / अवलोकन	स्रोत
MGNREGA	15	अनियमित कार्य अवसर	गुप्ता & कुशवाहा, 2024
ईदिरा आवास योजना	50	आवासीय परिस्थितियों में कुछ सुधार	सिंह, 2022
आदिवासी शिक्षा कार्यक्रम	40	आंशिक साक्षरता सुधार	टोप्पो, 2022
स्वास्थ्य आउटरीच कार्यक्रम	35	सीमित पहुँच, जागरूकता की समस्याएँ	नंदी एट अल., 2012

कुछ प्रगति के बावजूद, जीवन स्तर में ठोस सुधार सुनिश्चित करने के लिए एक अधिक समेकित और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

4.6 सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन और आधुनिककरण

आधुनिकीकरण ने पहाड़ी कोरवा की सामाजिक पहचान, व्यवसायिक पैटर्न और सांस्कृतिक प्रथाओं को प्रभावित किया है (बक्सला & मोल्लिक, 2024; दास, 2020)। प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं:

- **पारंपरिक व्यवसायों से परिवर्तन:** वनों की कटाई और नियामक प्रतिबंधों के कारण वन आधारित आजीविकाओं में गिरावट।
- **शिक्षा प्रेरित परिवर्तन:** युवा पीढ़ी औपचारिक शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक है, हालांकि बाधाएँ अभी भी मौजूद हैं।
- **सांस्कृतिक अनुकूलन:** पारंपरिक अनुष्ठान और त्योहार बनाए रखे जा रहे हैं, लेकिन बाहरी प्रभावों के तहत इनमें संशोधन किया गया है (बेहरा, 2022)।

तालिका 4.6: पहाड़ी कोरवा में देखे गए सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन

पहलू	पारंपरिक प्रथा	आधुनिक अनुकूलन / परिवर्तन	स्रोत
आजीविका	वन संग्रह, परंपरागत कृषि	मजदूरी, मौसमी पलायन	दास, 2020; सिंह, 2022
स्वास्थ्य प्रथाएँ	एथनोमेडिसिन	औपचारिक स्वास्थ्य के साथ आंशिक एकीकरण	बक्सला & साहू, 2023
शिक्षा	न्यूनतम साक्षरता	स्कूल में नामांकन में वृद्धि	टोप्पो, 2022; गुप्ता & कुशवाहा, 2024
लैंगिक भूमिका	मुख्यतः घरेलू और उपार्जन कार्य	महिलाएँ हस्तशिल्प और मजदूरी में शामिल	ध्रुव एट अल., 2020

4.7 प्रमुख चुनौतियाँ और अंतराल:

पहाड़ी कोरवा की सामाजिक-आर्थिक उन्नति में निम्नलिखित चुनौतियाँ बाधक हैं: **आर्थिक असुरक्षा**- कम आय, भूमि की कमी, और मौसमी बेरोजगारी। **स्वास्थ्य असमानताएँ** - उच्च कुपोषण, अपर्याप्त स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच, **शैक्षिक बाधाएँ** - लैंगिक असमानता और स्कूल ड्रॉपआउट, **सरकारी योजनाओं में सीमित भागीदारी** - जागरूकता और पहुँच में अंतर, **सांस्कृतिक संरक्षण बनाम आधुनिककरण** - पारंपरिक प्रथाओं और आधुनिक हस्तक्षेपों के बीच संतुलन। इन चुनौतियों का समाधान आर्थिक सहायता, शिक्षा, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण को मिलाकर किए गए समग्र हस्तक्षेपों के माध्यम से किया जाना चाहिए। एकीकृत दृष्टिकोण सामाजिक-आर्थिक लचीलापन बढ़ा सकता है और समुदाय को सतत रूप से सशक्त बना सकता है।

5. निष्कर्ष और नीतिगत सिफारिशें

5.1 निष्कर्ष:

छत्तीसगढ़ की पहाड़ी कोरवा जनजाति, जिसे विशेष रूप से संवेदनशील जनजातीय समूह (PVTG) के रूप में वर्गीकृत किया गया है, ऐतिहासिक हाशिएपन, भौगोलिक अलगाव और सामाजिक-सांस्कृतिक लचीलापन का अनूठा मिश्रण प्रस्तुत करती है। व्यापक साहित्य समीक्षा, जिसमें अनुभवजन्य अध्ययन, जातीयविज्ञान संबंधी विवरण और नीति मूल्यांकन शामिल हैं (सिंह, 2022; गुप्ता & कुशवाहा, 2024; मिश्रा, 2018; दास, 2020), यह स्पष्ट करती है कि जनजाति की सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता पारंपरिक प्रथाओं, आजीविका पैटर्न और सरकारी हस्तक्षेप के परिणामों के जटिल अंतःक्रियाशीलता से प्रभावित है।

5.1.1 सामाजिक-आर्थिक असुरक्षाएँ: पहाड़ी कोरवा का सामाजिक-आर्थिक प्रोफाइल निम्नलिखित लक्षणों से दर्शाया जा सकता है: कम पारिवारिक आय, सीमित भूमि स्वामित्व, और औपचारिक रोजगार के अवसरों में प्रतिबंध (रेलवानी & नमदेव, 2025; मुखर्जी & पटनायक, 2025)। आजीविका का मुख्य स्रोत उपार्जन कृषि है, जिसे वन आधारित संसाधनों के संग्रह और मौसमी मजदूरी से पूरक किया जाता है। आय स्रोतों की कमी आर्थिक असुरक्षा को बढ़ाती है, जिससे परिवार मौसमी और पर्यावरणीय झटकों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील बन जाते हैं। महिलाएँ महत्वपूर्ण आर्थिक भूमिका निभाती हैं, फिर भी घरेलू जिम्मेदारियों, शिक्षा की सीमित पहुँच और आय-सृजन गतिविधियों में कम भागीदारी के कारण असमान बोझ झेलती हैं (ध्रुव एट अल., 2020)।

5.1.2 शिक्षा और साक्षरता: पहाड़ी कोरवा में शिक्षा का स्तर चिंताजनक रूप से कम है, विशेष रूप से महिलाओं के लिए, जो लगातार लैंगिक असमानता को दर्शाता है (टोप्पो, 2022; गुप्ता & कुशवाहा, 2024)। कम साक्षरता न केवल रोजगार के अवसरों को सीमित करती है, बल्कि सरकारी योजनाओं तक पहुँच, सहभागी शासन और

सामाजिक-आर्थिक स्थिति सुधारने की क्षमता को भी प्रभावित करती है। आर्थिक आवश्यकताओं, भौगोलिक अलगाव और पारंपरिक आजीविकाओं के सापेक्ष शिक्षा की प्रासंगिकता जैसी सांस्कृतिक धारणाएँ स्कूल ड्रॉपआउट दर को बढ़ाती हैं।

5.1.3 स्वास्थ्य, पोषण और पारंपरिक प्रथाएँ: स्वास्थ्य और पोषण संकेतक महत्वपूर्ण चुनौतियाँ दिखाते हैं। कुपोषण, एनीमिया और उच्च शिशु व प्रसवपूर्व मृत्यु दर महिलाओं और बच्चों की असुरक्षित स्वास्थ्य स्थिति को उजागर करते हैं (दास एट अल., 2020; शर्मा, 2024; नागरिया एट अल., 2025)। औपचारिक स्वास्थ्य सुविधाओं तक सीमित पहुँच के कारण जनजातियाँ प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल के लिए पारंपरिक चिकित्सकों और एथनोमेडिसिन का सहारा लेती हैं, जो सामान्य बीमारियों में प्रभावी हैं, लेकिन गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान के लिए अपर्याप्त हैं (बक्सला & साहू, 2023; कुमार & जैन, 2023)। इसलिए पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक चिकित्सा हस्तक्षेपों को एकीकृत करने वाला द्विगुणीय स्वास्थ्य दृष्टिकोण आवश्यक है।

5.1.4 सरकारी हस्तक्षेप: उपलब्धियाँ और अंतराल: सरकारी योजनाएँ जैसे कि महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MGNREGA), इंदिरा आवास योजना, जनजातीय शिक्षा कार्यक्रम और स्वास्थ्य जागरूकता पहल मिश्रित परिणाम प्रस्तुत करती हैं (गुप्ता & कुशवाहा, 2024; श्रीवास्तव, 2020; चंद्राकर एट अल., 2023)। आवास और शिक्षा तक आंशिक पहुँच में कुछ सुधार हुआ है, लेकिन योजनाओं में भागीदारी सीमित है, जिसके कारण प्रशासनिक बाधाएँ, जागरूकता की कमी और सांस्कृतिक असंगतियाँ मुख्य कारण हैं।

5.1.5 सामाजिक-सांस्कृतिक गतिशीलता और आधुनिककरण: आधुनिकीकरण ने पहाड़ी कोरवा को जटिल रूप से प्रभावित किया है, जिससे अवसर और चुनौतियाँ दोनों उत्पन्न हुई हैं। कृषि, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक अनुष्ठानों में पारंपरिक प्रथाएँ आधुनिक शिक्षा, मजदूरी और औपचारिक स्वास्थ्य सेवाओं के साथ मिल रही हैं (बक्सला & मोल्लिक, 2024; बेहरा, 2022)। युवा पीढ़ी में साक्षरता और मुख्यधारा की सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों में प्रवेश बढ़ा है, फिर भी सांस्कृतिक संरक्षण समुदाय की पहचान के लिए प्राथमिकता है।

5.1.6 समग्र अंतर्दृष्टियाँ: समीक्षा से स्पष्ट है कि यद्यपि आंशिक सामाजिक-आर्थिक सुधार दिख रहे हैं, पहाड़ी कोरवा जनजाति अभी भी अत्यधिक संवेदनशील बनी हुई है। आर्थिक असुरक्षा, कम शैक्षिक स्तर, स्वास्थ्य असमानताएँ और सरकारी हस्तक्षेपों में सीमित भागीदारी संरचनात्मक असमानता को बनाए रखती हैं।

5.2 नीतिगत सिफारिशें: आर्थिक सशक्तिकरण:

आजीविका में विविधता- स्थानीय संसाधनों पर आधारित (हस्तशिल्प, वन उत्पाद, सतत कृषि) व्यावसायिक प्रशिक्षण, जनजातीय उत्पादों के लिए बाजार संबंध और आय के अवसर बढ़ाना (सेठी & कुशवाहा, 2025)।, **भूमि अधिकार और सुरक्षा-** भूमि दस्तावेजीकरण और कानूनी स्वामित्व सुनिश्चित करना (रेलवानी & नमदेव, 2025)।, **वित्तीय समावेशन-** महिलाओं के लिए माइक्रोफाइनेंस और स्वयं सहायता समूह (SHG) पहल का विस्तार।

5.2.1 शिक्षा और कौशल विकास: सामुदायिक शिक्षा केंद्र- भौगोलिक बाधाओं को पार करने के लिए मोबाइल और ग्राम स्तर के शिक्षा केंद्र, पारंपरिक ज्ञान और औपचारिक शिक्षा का समन्वय (टोप्पो, 2022)।, **महिला साक्षरता संवर्द्धन-** छात्रवृत्ति, मेंटरशिप और सामुदायिक जागरूकता अभियान, **युवा कौशल विकास-** क्षेत्रीय श्रम बाजार की मांग के अनुरूप कार्यशालाएँ (जैसे जैविक खेती, हस्तशिल्प, इकोटूरिज्म)।

5.2.3 स्वास्थ्य और पोषण: एकीकृत स्वास्थ्य कार्यक्रम- पारंपरिक चिकित्सा और आधुनिक चिकित्सा का सम्मिलन (कुमार & जैन, 2023)।, **पोषण सुधार पहल-** मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, एनीमिया रोकथाम, आहार विविधता पर केंद्रित सामुदायिक कार्यक्रम (दास एट अल., 2020)।, **स्वास्थ्य सुविधा पहुँच-** मोबाइल स्वास्थ्य इकाइयाँ और टेलीमेडिसिन सेवा का विस्तार।

5.2.4 सरकारी योजनाओं में भागीदारी सुदृढ़ करना: जागरूकता अभियान- स्थानीय नेताओं और प्रभावशाली व्यक्तियों के माध्यम से योजनाओं की जानकारी, **प्रशासनिक प्रक्रियाओं का सरलीकरण-** आवेदन प्रक्रिया सरल और दस्तावेजीकरण कम करना। **निगरानी और जवाबदेही-** समुदाय-आधारित निगरानी समिति की स्थापना।

5.2.5 सांस्कृतिक संरक्षण और सतत विकास: एथनोमेडिकल ज्ञान का संवर्द्धन- पारंपरिक चिकित्सा का दस्तावेजीकरण और वैज्ञानिक मूल्यांकन (बक्सला & साहू, 2023)।, **सामुदायिक नेतृत्व वाली संरक्षण पहल-** वन और जैव विविधता का सतत उपयोग (नागवंशी & कुमार, 2025)।, **सांस्कृतिक शिक्षा कार्यक्रम-** भाषाएँ, अनुष्ठान और त्योहारों के संरक्षण के लिए स्कूल और सामुदायिक केंद्रों में पहल।

5.2.6 लैंगिक-संवेदी नीतियाँ: महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण- कौशल प्रशिक्षण, वित्तीय साक्षरता और बाजार तक पहुँचा, **स्वास्थ्य और प्रजनन अधिकार-** मातृ स्वास्थ्य, परिवार नियोजन और जागरूकता कार्यक्रम (नंदी एट अल., 2012)।

5.2.7 अनुसंधान और डेटा-आधारित नीति: आर्थिक-सामाजिक सर्वेक्षण- प्रत्येक 3-5 वर्ष में व्यापक सर्वेक्षण। **साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण-** सर्वेक्षण निष्कर्षों के आधार पर लक्षित कार्यक्रम और अंतराल की पहचान।

5.3 निष्कर्षात्मक टिप्पणी:

पहाड़ी कोरवा की सामाजिक-आर्थिक उन्नति के लिए समग्र और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील दृष्टिकोण आवश्यक है, जो आर्थिक विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक संरक्षण को एकीकृत करे। सरकारी योजनाएँ सुधार का आधार प्रदान करती हैं, लेकिन उनकी प्रभावशीलता पहुँच, सांस्कृतिक बाधाओं और प्रणालीगत चुनौतियों से सीमित है। आजीविका में विविधता, महिला शिक्षा, एकीकृत स्वास्थ्य और सहभागी शासन पर ध्यान केंद्रित करके नीति निर्माता सतत विकास को बढ़ावा दे सकते हैं।

और जनजाति की सांस्कृतिक पहचान का सम्मान कर सकते हैं। अंततः, पहाड़ी कोरवा की सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता को बढ़ाना केवल सामाजिक न्याय का मामला नहीं है, बल्कि स्थानीय ज्ञान प्रणालियों के संरक्षण, क्षेत्रीय समानता और छत्तीसगढ़ में समावेशी विकास को बढ़ावा देने का एक रणनीतिक निवेश भी है। सरकार, नागरिक समाज, जनजातीय समुदाय और शोधकर्ताओं के सहयोग से ही यह लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. करी, बी., & मैथ्यू जी. (2022)। बिलासपुर, छत्तीसगढ़ की तीन जनजातियों में प्रजनन उपाय और पूर्वानुमान कारकों का तुलनात्मक विश्लेषण। *Cogent सामाजिक विज्ञान*, 8. <https://doi.org/10.1080/23311886.2022.2106649>
2. कश्यप, एस., & लक्ष्मी, एस. (2025)। छत्तीसगढ़ के हल्बा में रोग धारणा और स्वास्थ्य-seeking व्यवहार। *IJRDO - सामाजिक विज्ञान और मानविकी अनुसंधान पत्रिका*. <https://doi.org/10.53555/sshr.v1i1i1.6290>
3. कुजुर, आर., कुजुर, एन., & सिंह, एस. (2022)। छत्तीसगढ़ के पहाड़ी कोरवा जनजाति में पारंपरिक स्वास्थ्य देखभाल प्रथाओं में मूल्य और नैतिकता। *मानविकी और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान पत्रिका*. <https://doi.org/10.52711/2321-5828.2022.00024>
4. कुमार, वी., & जैन, एस. (2023)। भारत के जनजातीय बहुल राज्यों में पारंपरिक जनजातीय चिकित्सक और उनकी उपचार प्रथाओं का परिदृश्य विश्लेषण। *अंतर्राष्ट्रीय बहुविषयक अनुसंधान पत्रिका*. <https://doi.org/10.36948/ijfmr.2023.v05i05.7284>
5. कोल्ला, ए., गवरी, एस., कोल्ला, वी., & साहू, बी. (2025)। छत्तीसगढ़ के गोंड जनजाति में स्त्रीरोग संबंधी पारंपरिक एथनोमेडिसिनल प्रथाएँ: एक क्षेत्रीय दृष्टिकोण। *अंतर्राष्ट्रीय सामुदायिक चिकित्सा और जन स्वास्थ्य पत्रिका*. <https://doi.org/10.18203/2394-6040.ijcmph20250650>
6. कोहली, एन., गुयेन, पी., अंबुला, आर., & मेनन, पी. (2020)। छत्तीसगढ़, भारत में स्टंटिंग कमी में राज्य सरकार, नागरिक समाज और विभिन्न क्षेत्रीय कार्यक्रमों की भूमिका, 2006–2016। *BMJ ग्लोबल हेल्थ*, 5. <https://doi.org/10.1136/bmjgh-2019-002274>
7. खान, आई. (2018)। पहाड़ी कोरवा की जातीयविज्ञानात्मक रूपरेखा: छत्तीसगढ़ का विशेष रूप से संवेदनशील जनजातीय समूह (PVTGs)। *अंतर्राष्ट्रीय बहुविषयक अनुसंधान पत्रिका*, 3(10), 415
8. खान, एम. ए., & चौहान, जे. के. (2021)। छत्तीसगढ़ के जनजातीय और गैर-जनजातीय कृषक समुदायों की आर्थिक स्थिति पर तुलनात्मक अध्ययन। *जर्नल ऑफ फार्माकोगोसी एंड फाइटोकेमिस्ट्री*, 10(विशेष अंक 1), 290–293
9. गजपाल, एल. (2025)। भुजिया जनजाति में सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन: एक दृष्टिकोण। *अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान उन्नति पत्रिका*. <https://doi.org/10.52711/2454-2679.2025.00007>
10. गुप्ता, आर., & कुशावाह, ए. (2024)। छत्तीसगढ़ राज्य की सरकारी योजनाओं का पांडो जनजाति के जीवनशैली पर प्रभाव का अध्ययन। *अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक और शोध प्रकाशन पत्रिका*. <https://doi.org/10.29322/ijrsp.14.08.2024.p15204>
11. गौर, एम., & पटनायक, एस. (2011)। "कोरवा में कौन स्वस्थ है?" केंद्रीय भारत के विस्थापित कोरवा की अनुभवजन्य स्वास्थ्य में सीमांतता। *मेडिकल एंथ्रोपोलॉजी क्वार्टरली*, 25(1), 85–102. <https://doi.org/10.1111/j.1548-1387.2010.01138.x>
12. चंद्राकर, के., चंद्राकर, डी., & दास, डी. (2023)। छत्तीसगढ़ के जनजातीय समुदाय को सशक्त बनाना: बाधाएँ और अवसर। *अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान और शोध अभिलेख पत्रिका*. <https://doi.org/10.30574/ijrsra.2023.8.1.0081>
13. टोप्पो, एस. वी. (2022)। पहाड़ी कोरवा जनजाति का सामाजिक और आर्थिक जीवन। *क्वेस्ट जर्नल्स: मानविकी और सामाजिक विज्ञान में शोध पत्रिका*, 10(7), 44–47
14. दास, एल. (2020)। विशेष रूप से संवेदनशील जनजातीय समूह में बदलाव के रूझान: छत्तीसगढ़ के पहाड़ी कोरवा का विवरण। *जनजातीय और आदिवासी अध्ययन पत्रिका*, 10(1), 87–96
15. दास, एस., घृतलहरे, एम., सिद्धिकी, ए., & मीतई, के. (2020)। जशपुर के पहाड़ी कोरवा पूर्वविद्यालय बच्चों की पोषण स्थिति: छत्तीसगढ़ का विशेष रूप से संवेदनशील जनजातीय समूह। *BLDE विश्वविद्यालय स्वास्थ्य विज्ञान पत्रिका*, 5, 20–25. https://doi.org/10.4103/bjhs.bjhs_43_19
16. ध्रुव, बी., कौशल, आर., भगत, आर., & अत्रि, एन. (2020)। छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले में कृषि और सहायक क्षेत्रों में जनजातीय महिलाओं की भागीदारी। *अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका*, 8, 334–344. <https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v8.i9.2020.1225>
17. नंदी, एस., मिश्रा, जे., कणुंगो, के., माणिकपुरी, एच., यादव, सी., पैकरा, जी., & उपाध्याय, वी. (2012)। विशेष रूप से संवेदनशील जनजातीय समूह (PTGs) में प्रजनन अधिकारों की बहाली हेतु सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिवक्ता। *BMC प्रोसिडिंग्स*, 6, P1. <https://doi.org/10.1186/1753-6561-6-s5-p1>
18. नागवंशी, आर., & कुमार, ए. (2025)। छत्तीसगढ़ के बिरहोर जनजाति की पारंपरिक आर्थिक प्रथाएँ और सतत विकास में इसकी प्रासंगिकता। *शोधसामाजिक: सामाजिक अध्ययन पत्रिका*. <https://doi.org/10.29121/shodhsamajik.v2.i2.2025.22>
19. बंदिवा, एस., & मोहापात्रा, जे. (2025)। हो जनजाति का सामाजिक-आर्थिक जीवनशैली: ओडिशा के मयूरभंज जिले में एक केस स्टडी। *अंतर्राष्ट्रीय उन्नत शोध पत्रिका*. <https://doi.org/10.21474/ijar01/20449>

20. बक्सला, एन., & मोल्लिक, एफ. (2024)। पहाड़ी कोरवा की सांस्कृतिक रूपरेखा। *द एशियन मैन*, 18(1-2), 130-138. <https://doi.org/10.5958/0975-6884.2024.00017.1>
21. बक्सला, एन., & साहू, पी. (2023)। पहाड़ी कोरवा जनजातियों में स्वास्थ्य धारणा और उपचार प्रथाएँ। *भारतीय मानवविज्ञान अनुसंधान पत्रिका*. <https://doi.org/10.21088/ijra.2454.9118.9223.3>
22. बेहेरा, जी. (2022)। छत्तीसगढ़ और झारखंड, भारत में कोरवा और कोडकू जनजातियों की सामाजिक-भाषाई रूपरेखा। *जर्नल ऑफ लैंग्वेज सर्वे रिपोर्ट*, 2022(014). SIL International
23. बोस, पी. (2023)। समान भूमि-उपयोग नीति? आदिवासी लोगों का खनन-प्रेरित वनों की कटाई के खिलाफ प्रतिरोध। *लैंड यूज पॉलिसी*. <https://doi.org/10.1016/j.landusepol.2023.106648>
24. भोई, ए., & कुमार, एस. (2025)। छत्तीसगढ़ के बिरहोर जनजाति में आहार संबंधी आदतों का मूल्यांकन (विशेष संदर्भ: रायगढ़ और बिलासपुर जिले)। *मानविकी और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान पत्रिका*. <https://doi.org/10.52711/2321-5828.2025.00002>
25. भोई, एन., & आचार्य, एस. (2024)। ओडिशा के विशेष रूप से संवेदनशील जनजातीय समूहों (PVTGs) की स्वास्थ्य स्थिति: एक वर्णनात्मक समीक्षा। *जर्नल ऑफ हेल्थ, पोपुलेशन एंड न्यूट्रिशन*, 43. <https://doi.org/10.1186/s41043-024-00671-8>
26. मिश्रा, आर. (2016)। छत्तीसगढ़ के पहाड़ी कोरवा जनजाति की महिलाओं और बच्चों की पोषण और स्वास्थ्य स्थिति। 21, 1
27. मिश्रा, ए. (2018)। पहाड़ी कोरवा: छत्तीसगढ़ का विशेष रूप से संवेदनशील जनजातीय समूह (PVTG)। *अंतर्राष्ट्रीय प्रबंधन समाजशास्त्र और मानविकी शोध पत्रिका*, 9(9), 238-243. <https://doi.org/10.32804/>
28. मीना, एस. (2024)। राजस्थान के डूंगरपुर जिले में जनजातीय जनसंख्या का सामाजिक-आर्थिक प्रोफाइल का मूल्यांकन। *ह्यूमैनिटीज एंड डेवलपमेंट*. <https://doi.org/10.61410/had.v19i1.178>
29. मुखर्जी, ए., & पटनायक, बी. (2025)। छत्तीसगढ़ के निष्कासित जनजाति: उनके गरीबी और हाशिएपन की गाथा। *सामाजिक विज्ञान बुलेटिन*, 74, 132-151. <https://doi.org/10.1177/00380229241313445>
30. मेघानी, ए., शर्मा, एम., सिंह, टी., दास्तिदार, एस., धवन, वी., कनागत, एन., गुप्ता, ए., भटनागर, ए., सिंह, के., शियर, जे., & सोनी, जी. (2024)। जनजातीय समुदायों में COVID-19 टीका लेने की दर बढ़ाना: झारखंड और छत्तीसगढ़ राज्यों के कार्यक्रम कार्यान्वयन अनुभव पर एक केस स्टडी। *टीके*, 12. <https://doi.org/10.3390/vaccines12050463>
31. मेहता, एस., & चक्रवर्ती, एम. (2025)। बैगा जनजाति की सामाजिक-आर्थिक स्थिति (SES) संशोधित कुपुस्वामी पैमाने-2023 के अनुसार। *अंतर्राष्ट्रीय बहुविषयक अनुसंधान पत्रिका*. <https://doi.org/10.36948/ijfmr.2025.v07i03.42456>
32. यादव, पी., & श्रीवास्तव, एस. (2020)। जशपुर जिले के जनजातियों द्वारा कुछ औषधीय पौधों के उपयोग का अध्ययन। 1, 45-51. <https://doi.org/10.47857/irjms.2020.v01i04.022>
33. राठौर, आर. (2024)। पारंपरिक उपयोग और एथनो-औषधीय पौधे: छत्तीसगढ़ के कोरवा जिले से दृष्टांता प्लांट आर्काइव्स। <https://doi.org/10.51470/plantarchives.2024.v24.no.1.216>
34. रेलवानी, एन., & नामदेव, के. (2025)। मुंगेली जिले के अचनकमार-अमरकंटक बायोस्फीयर रिजर्व के स्थानीय जनजातियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन। *एशियाई कृषि विस्तार, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र पत्रिका*. <https://doi.org/10.9734/ajaees/2025/v43i42715>
35. लहरे, पी. सी. (n.d.). पहाड़ी कोरवा समाज में प्रथागत कानून (डॉ. टी. राधा कृष्णन, मार्गदर्शन; श्री बालभद्र राम, निर्देशन)। आदिवासी अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान, क्षेत्रीय इकाई अम्बिकापुर-सुरगुजा, छत्तीसगढ़
36. शर्मा, एस. (2024)। छत्तीसगढ़ के विशेष रूप से संवेदनशील जनजातीय समूह, पहाड़ी कोरवा में प्रसव पूर्व और शिशु मृत्यु दर पर प्रभाव डालने वाले कारक। *जर्नल ऑफ कम्युनिटी मेडिसिन*, 7(1), 1050
37. शर्मा, सी., तिवारी, पी., & सतपथी, एस. (2023)। जनजातीय उद्यमिता की चुनौतियाँ और अवसर: बिलासपुर, छत्तीसगढ़ के जनजातीय लोगों पर अध्ययन। *अंतर्राष्ट्रीय शोध और समीक्षा पत्रिका*. <https://doi.org/10.52403/ijrr.20230797>
38. श्रीवास्तव, ए. के. (2020)। विशेष रूप से संवेदनशील जनजातीय समूह (PVTGs) के लिए विकास योजनाएँ: कोरवा जनजाति का एक केस स्टडी। *शोधगंगोत्री*
39. सिंह, एस. (2023)। जशपुर जिले में जनजातीय और गैर-जनजातीय घरों की आय और रोजगार पैटर्न: एक तुलनात्मक अध्ययन। *एग्रो-इकोनोमिस्ट*. <https://doi.org/10.30954/2394-8159.03.2023.5>
40. सिंह, एस. के. (2022)। छत्तीसगढ़ के पहाड़ी कोरवा और बिरहोर जनजातियों की आर्थिक स्थिति। *अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक वैज्ञानिक अनुसंधान पत्रिका*, 8(7), 76-77
41. सेठी, ए. (2020)। छत्तीसगढ़ के बिरहोर जनजातियों में गरीबी और ऋण। 23, 5-14. <https://doi.org/10.52228/jrua.2017-23-1-4>
42. सेठी, ए., & कुशवाह, आर. (2025)। जनजातीय हस्तशिल्प: चुनौतियाँ और अवसर (विशेष संदर्भ: छत्तीसगढ़ राज्य)। *रविशंकर विश्वविद्यालय पत्रिका (भाग-A)*. <https://doi.org/10.52228/jrua.2025-31-2-3>